THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

क्रिश्चियन सायँस द्वारा कष्ट का उपचार

Suffering healed through Christian Science

Name withheld

The Christian Science Monitor June 24, 1998

मानवीय मन की धारणा के सिवसय कोई भी परिस्थिति कष्ट पैदा नहीं कर सकती – क्रिश्चियन सायँस इस बात को प्रकाशित करती है। मेरी बेकर ऐडी द्वारा लिखी 'सायँस एण्ड हैल्थ विद की टू द स्क्रिपचर्स' इस बात की व्याख्या करती है कि रवीस्तीय वैज्ञानिक उपचार में शरीर पर से मानवीय मन के प्रभाव को हटा कर उस की जगह सोच को **परमेश्वर** की आध्यात्मिक समझ से भर देना चाहिए।

सोच में इस बदलाव के फलस्वरूप ही उपचार होता है। प्रार्थना, **परमेश्वर** को जानने की इच्छा, सोच के आधार को भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर ले जाती है – मिथ्या धारणाओं के प्रभाव से **परमेश्वर**, दिव्य **मन*** और **मन** के आध्यात्मिकता विचारों की समझ की ओर।

एक जगह, सायँस एण्ड हैल्थ में वर्णन है कि किस तरह एक इन्सान को यकीन हो गया कि जिस बिस्तर पर वह है उस पर पहले ऐसा रोगी था जिसकी हैजे से मृत्यु हो गई थी। तुरन्त ही उसमें भी रोग के लक्षण दिखने लगे और उसकी मृत्यु हो गई। लेकिन उसने हैजे को शरीरिक सम्पर्क से नहीं पकड़ा था; हैजे का रोगी कभी उस बिस्तर पर था ही नहीं (पृष्ठ 154 देखिये) एक और जगह इस पुस्तक में उल्लेख है कि किस तरह एक व्यक्ति जिसने गलती से सोचा कि वह रक्त निकलने से मृत्यु की तरफ बढ़ रहा था, इसी धारणा के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गया जबकि सत्य यह है कि जिसे उसने रक्त सोचा था वह केवल गर्म पानी था जो उसकी बाँह पर टपक रहा था (पृष्ठ 379 देखिये)।

इस अनुभव का वर्णन इस बात की तरफ इशारा करता है कि धारणा ही असर को उत्पन्न करती है कभी–कभी अशान्त नतीजों के साथ। दूसरी तरफ, आध्यात्मिक समझ मात्र धारणा से परे है और सदा अच्छाई को बढ़ावा देती है। यदि एक इंसान को यह यकीन है कि मौसम, भोजन और आनुवांशिकी इत्यादि कष्ट का कारण है तो उसका नतीजा इस बात को समीकृत करेगा जैसी उसकी धारणा है। लेकिन इस बात को जान लेना कि **परमेश्वर** ही एकमात्र शक्ति है उसकी सोच की क्षमता में सुधार लाता है और उसके दैनिक जीवन की क्षमता में सुधार लाता है। उसका उपचार करता है।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह **परमेश्वर** के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मिसिज़ ऐडी जिन्होनें रव्रीस्त की विज्ञान की खोज की, लिखा 'दिव्य विज्ञान का आरम्भ परमेश्वर, आत्मा सर्वेसर्वा है और इसके सिवाए कोई शक्ति और मन नहीं है – परमेश्वर ही प्रेम है इसलिए वही दिव्य सिद्धांत है (सायँस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 275) । यथार्थ में परमेश्वर, दिव्य मन से अलग हमारा कोई मन है ही नही। मनवीय मन के भय और मिथ्या धारणाओं का कोई अन्तिम अस्तित्व नहीं है वे तो केवल हमारे परमशेवर से रिश्ते के बाहर एक काल्पनिक जगह पर वास करते हैं।

खीस्तीय उपचार का आधार है कि हमारा असली अस्तित्व इस वक्त असल में आध्यात्मिक और सम्पूर्ण है। रचयिता का कार्य आध्यात्मिक, पूर्ण तथा सर्वदा अच्छा है। परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता सदा रहने वाला, अटूट है तथा यह हमारा दिव्य जन्मसिद्ध अधिकार है।

प्रार्थना दिव्य मन के साथ हमारे रिश्ते की स्वीकृति को शामिल करती है और मानवीय मन ने जिन मिथ्या धारणाओं को पकड़ रखा है और जो परेशानी का कारण हैं उन को नकारती है। यह सोच को उसके साथ सुव्यवस्थित करती है जो भी आध्यात्मिक सच्चाई है और जैसा सब कुछ असल में है। यह परमेश्वर को सुनना है, उन विचारों को जो वह प्रदान करता है। उपचार करने वाला संदेश प्रार्थना से आ सकता है, तंदरूस्ती के अनुभव से या इस दृढ़ धारणा से कि दिव्य उपस्थिति नियन्त्रण में है। यही रव्रीस्त है वह दिव्य प्रभाव जो विचारों में बदलाव लाता है। उपचार इसी का नतीजा है।

एक रात में मतली और पेट दर्द के साथ जागी मैंने शाम को मछली खा ली थी और अब मुझे यकीन था कि वह दूषित होगी। मैंने प्रार्थना की और परमेश्वर को सुना। शब्द शरण–स्थान मेरे मन में आया। क्रिश्चियन सायँस के अध्ययन से मैं जानती थी कि आध्यात्मिक चेतना में 'आत्मा के शरण–स्थान' में संरक्षण पाना मुमकिन है (सायँस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 15, देखिये) शरण–स्थान एक आश्रय हो सकता है। हाँ और मैं उसे ठीक वहीं पा सकती थी जहाँ मै थी, मेरी आध्यात्मिकता की और मेरे रिश्ते की, मेरे रचयिता, दिव्य मन के साथ पुष्टि कर के मैं इस दिव्य उपस्थिति के आराम और संरक्षण को महसूस करना चाहती थी, यह जानते हुए कि इससे उपचार होगा।

मैंने इस धारणा को नकार दिया कि मैं मात्र मॉस, खून और हड्डियों की बनी नश्वर मानव हूँ। मैनें इस मत को बाहर निकाल दिया कि दूषित भोजन मेरे असली, आध्यात्मिक अस्तित्व को हानि पहुंचा सकता है। मैनें तर्क किया कि 'आत्मा के शरण–स्थान' में कोई बीमारी नहीं होती। मैं केवल आत्मा, दिव्य–सिद्धांत, प्रेम के प्रति चेतन हो सकती थी, जो शांति और समन्वय प्रदान करते हैं।

फिर अंधेरे में उजाला फूटने की तरह, मैंने महसूस किया कि असल में परमेश्वर की सर्वव्यापकता के बाहर कुछ है ही नहीं। 'आत्मा के शरण स्थान' से बाहर जाना असंभव है क्योंकि आत्मा सब जगह है ओर सारी जगह को भरती है। बीमारी के लक्षण घटने लगे और मैं बहुत ही कम समय में स्वस्थ हो गई।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.